

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1 * * Issue-5 * * December 2024 *

महात्मा गांधी और स्वदेशी अवधारणा: एक अध्ययन**दिव्य प्रकाश सिंह**

शोधार्थी, श्री वैकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, यू.पी.

सारांश: महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ना केवल एक प्रमुख नेता थे बल्कि एक दार्शनिक और समाज सुधारक भी थे। जिनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को स्वराज की आत्मा कहा था। स्वदेशी गांधी के जीवन दर्शन का मूल तत्व है स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना ही नहीं था बल्कि यह एक व्यापक दर्शन था जो सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का बढ़ावा देता था। स्वदेशी आंदोलन महात्मा गांधी के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था जो भारतीय समाज के सभी वर्गों को एकजुट करने और एक साझा उद्देश्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता था यह आंदोलन भारतीय को उनकी शक्ति और आत्मविश्वास का एहसास दिलाने का माध्यम था। गांधी जी का यह विश्वास था कि केवल एकजुटता और आत्मनिर्भरता के माध्यम से ही भारत स्वतंत्रता और समृद्धि प्राप्त हो सकती है। इसके माध्यम से उन्होंने भारतीयों को आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित किया ताकि विदेशी शासन से मुक्ति पा सकें और अपने संसाधनों और सामर्थ्य का सही उपयोग कर सकें। इस शोध पत्र में महात्मा गांधी के स्वदेशी की अवधारणा के ऐतिहासिक संदर्भ तथा वर्तमान में प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण किया गया है जहां आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्टार्टअप्स और सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यमों (डैडम्) तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, लोकल फोर वोक्ल, नैतिक उपभोग, ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन, विकसित भारत, पर्यावरण स्थिरता आदि को बढ़ावा देना का प्रयास कर रहा है। वर्तमान समय में हम विचार करते हैं तो यह बात समझ में आती है कि स्वदेशी की अवधारणा वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी प्रगति के युग में आज भी प्रासंगिक है।

कुंजी: स्वदेशी, स्वराज, सामाजिक, आर्थिक, उद्यम, रोजगार।

प्रस्तावना—

गाँधी जी की स्वदेशी की अवधारणा— स्वदेशी वह भावना है जो हमें दूर दराज के इलाकों को छोड़कर अपनी समीपस्थ क्षेत्र का उपयोग करने उनकी सेवा करने तक सीमित करती है। आम आदमी की घोर नीरधनता का कारण आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र स्वदेशी का त्याग है। यदि एक भी चीज भारत के बाहर से न खरीदी जाती तो इस देश में घी दुध की नदियाँ बह रही होती। लेकिन ऐसा नहीं होना था। हम लालची हैं और हम जैसा लालची इंग्लैंड भी था। यदि हम स्वदेशी के सिद्धान्त का पालन करें तो आपका ओर मेरा यह कर्तव्य हो जायोगा की ऐसे पड़ोसियों को ढूँढें जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं हमें दे सकें और यदि वे किन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करने में अस्मर्थ हो तो हम उन्हें अपेक्षित प्रशिक्षण दें।

महात्मा गाँधी जी स्वदेशी की अवधारणा उनके आर्थिक, सामाजिक और नैतिक विचारों का मूल आधार थी उन्होंने स्वदेशी को केवल आर्थिक नीति के रूप में नहीं बल्कि इसे एक जीवन दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया उनके अनुसार स्वदेशी का अर्थ है। अपने देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को प्राथमिकता के देना। तथा देश में बने वस्त्र समान और संसाधनों का उपयोग करना तथा विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता को कम करना था।

स्वदेशी के आयाम— स्वदेशी का राजनितिक आयाम— गाँधी जी ने 1909 में अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज या भारतीय स्वशासन में आंतरिक शासन (स्वराज) की आवश्यकता पर बल दिया था वे राजनीतिक स्वशासन के मध्य से लोगों को सशक्त बनाना चाहते थे। विकेन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था का उनका द्रष्टिकोण पचायती

राज था। गाँधी जी ने समाज के पिरामिडनुमा सरचना के विपरित व्यक्ति को समाज के केन्द्र में रखते हुए महासागरीय वृत्त की अवधारणा प्रस्तुत करके ग्राम स्वराज के अपने द्रष्टिकोण को और स्पष्ट किया असंख्यक गावों से बनी इस सरचना में निरंतर विस्फुरित होते हुए कभी ऊपर न उठने वाले वृत्त होंगे। जीवन एक पिरामिड नहीं होगा जिसका शीर्ष तल से टिका होगा। बल्कि यह एक महासागरीय वृत्त होगा जिसका केन्द्र वह व्यक्ति होगा जो गाँव के वृत्त के लिए सदैव मिटने को तैयार रहेगा जब तक कि अंततः समग्रता व्यक्तियों से बना एक जीवन ना बन जाए तो अपने अहंकार में कभी आक्रमक न हो बल्कि सदैव विनम्र हो उस महासागरीय वृत्त की महिमा को साझा करे जिसकी वे अभिन्न इकाइयाँ हैं।

स्वदेशी का सामाजिक आयाम— स्वदेशी भावना को भारतीय सामाजिक सरचना के सन्दर्भ में लागू करते हुए गाँधी जी ने शुरू में इससे जुड़ी वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया उन्होंने समाज को चार स्तरीय विभाजन का स्वागत किया जो विशुद्ध रूप से विभिन्न वर्गों के लोगो द्वारा किए जाने वाले कर्तव्य पर आधारित था। वे सभी व्यवसायों को समान रूप से महत्वपूर्ण मानते थे उन्होंने कुछ घृणित प्रथाओं को त्याग कर जाति व्यवस्था के दोषों को दूर करने का गंभीर प्रयास किया जिन्हें वे ऐतिहासिक वृद्धि मानते थे जो मूल व्यवस्था का अभिन्न अंग नहीं थी उन्होंने जन्म और उससे जुड़ी सामाजिक स्थिति पर आधारित प्रचलित जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया यही कारण था कि उन्होंने अस्पृश्यता के अभिशाप के खिलाफ सबसे अधिक संघर्षों में से एक शुरू किया जो भारत में जाति व्यवस्था का एक अभिन्न अंग था वह समाज के कमजोर वर्गों जैसे दलित, महिलाओं, आदिवासियों, कुष्ठ रोगियों आदि की समस्याओं और दुर्दशा के बारे में गहराई से चिंतित थे। उनका मानना था समाज के वंचित वर्गों के उत्थान को अपने 18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम का उद्देश्य शैक्षिक और भागीदारी पूर्ण सामाजिक कार्यवाही के माध्यम से समाज का पुनर्निर्माण करना था एक तरह से रचनात्मक कार्य नागरिक समाज गैर सरकारी संगठनों की भूमिका निभाता है।

स्वदेशी का आर्थिक आयाम— गांधी जी के स्वदेशी की आर्थिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ वह आत्मनिर्भरता जिसका लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय अपनी आवश्यकताओं को स्थानीय संसाधनों से पूर्ण करना है स्थानीय उद्योगों का विकास जिसमें खादी, हस्तशिल्प, चरखा, हथकरघा और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया गया जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले रोजगार सृजन जहाँ बेरोजगारी की समस्या को कम करने में मदद मिलेगी पूंजी का देश में संचय विदेशी वस्तु पर खर्च होने वाली भारतीय धनराशि देश के भीतर ही बचे और देशी उद्योगों में लगाई गई इससे भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

स्वदेशी का धार्मिक आयाम: गांधीजी ने स्वदेशी के अपने विचार को धर्म से जोड़ा उनके अनुसार स्वदेशी अध्यात्म और धर्म के दर्शन से जुड़ा हुआ था, उन्होंने आर्थिक स्वदेशी के बदले की वजह से किए गए बहिष्कार आंदोलन के रूप में नहीं बल्कि एक धार्मिक सिद्धांत के रूप में माना जिसका सभी पालन करें उनका मानना था कि व्यक्तियों को होने वाले शारीरिक परेशानों के बावजूद पूरी श्रद्धा से किया जाने वाला एक धार्मिक सिद्धांत था स स्वदेशी के विचारों के अनुरूप एक व्यक्ति सौ चीजों के बिना करना सीखेगा जिसे आज वह आवश्यक मानता है, गांधी जी के अनुसार धर्म में स्वदेशी गौरवशाली अतीत को मापने और वर्तमान पीढ़ी में से फिर से लागू करने के लिए सीखाता है, उन्होंने बताया कि उसे समय यूरोप में अराजकता चल रही थी, उसमें दिखाया गया कि आधुनिक सभ्यता ने बुराई और अंधकार की शक्तियों का प्रतिनिधित्व किया जबकि प्राचीन अर्थात् भारतीय सभ्यता अपने सार दैवीय बल का प्रतिनिधित्व करती थी। भारतीय सभ्यता जो आध्यात्मिक थी कि तुलना में आधुनिक सभ्यता मुख्य रूप से भौतिकवादी विनाशकारी थी स्वदेशी का संबंध हिंदू धर्म से है। गांधी जी के लिए हिंदू धर्म समावेशी सहिष्णु और सुधारवादी था, उस अर्थ में गांधी को स्वदेशी हिंदू धर्म की परंपरा को संजोकर रखती है।

स्वदेशी आंदोलन और खादी का महत्व— स्वदेशी आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने खादी को न केवल एक वस्त्र रूप में देखा, बल्कि इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख प्रतीक बना दिया। गांधी जी के लिए खादी का महत्व बहुत गहरा था, क्योंकि यह सिर्फ एक कपड़ा नहीं था, बल्कि यह भारतीय स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन गया। ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत में अपने कपड़े उद्योग को बढ़ावा दिया था, और भारतीय कारीगरों और किसानों को अपनी पारंपरिक कला और उद्योगों को छोड़ने के लिए मजबूर किया था। गांधी जी ने यह समझाया कि खादी का उत्पादन और पहनावा भारतीयों को न केवल ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करेगा, बल्कि यह भारतीयों को आत्मनिर्भर बनाने का भी एक सशक्त माध्यम होगा। गांधी जी

के लिए खादी का महत्व केवल एक साधारण वस्त्र रूप में नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का हिस्सा था। स्वदेशी आंदोलन के तहत, गांधी जी ने भारतीयों को विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया, और खादी को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि जब भारतीय लोग विदेशी वस्त्रों का उपयोग छोड़कर अपनी घरेलू उत्पादित वस्त्रों को पहनेंगे, तो इससे भारतीय अर्थव्यवस्था सशक्त होगी, और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक मजबूत आर्थिक लड़ाई लड़ी जा सकेगी।

गांधी जी का खादी के प्रति दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उनका मानना था कि खादी केवल एक व्यावसायिक उत्पाद नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज को आत्मनिर्भर बनाने का एक साधन था। खादी के उत्पादन से भारतीय कारीगरों और किसानों को रोजगार मिलता था, और इससे देश की कृषि और कारीगरी की पुनरावृत्ति होती थी। गांधी जी ने खादी को हर भारतीय नागरिक के जीवन का हिस्सा बनाने का आह्वान किया, ताकि न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त की जा सके, बल्कि भारतीय समाज को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया जा सके। खादी का पहनावा भी भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक था, जिसे गांधी जी ने एक साधारण और उच्च नैतिक मानदंड के रूप में प्रस्तुत किया। खादी का उत्पादन भारतीय ग्रामों में स्थानीय स्तर पर किया जाता था, और इसने गांवों में रोजगार सृजन और आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधी जी के अनुसार, खादी ने भारतीयों को यह संदेश दिया कि अगर हमें सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करनी है, तो हमें अपने देश के उत्पादों को प्राथमिकता देनी होगी और बाहरी प्रभावों से मुक्ति प्राप्त करनी होगी।

स्वदेशी विचारधारा और ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध— महात्मा गांधी की स्वदेशी विचारधारा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक निर्णायक मोड़ प्रस्तुत किया, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध और भारतीय जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। गांधी जी ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीयों को यह समझाया कि उनका आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ है। उनका विश्वास था कि यदि भारतीय अपनी वस्त्र, उत्पाद और संसाधन अपने देश में ही उत्पन्न करें और उनका प्रयोग करें, तो यह ब्रिटिश साम्राज्य को आर्थिक रूप से कमजोर कर देगा और अंततः भारत की स्वतंत्रता की राह खोलेगा।

गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष को केवल राजनीतिक आंदोलन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्निर्माण के रूप में भी देखा। उनका मानना था कि जब भारतीय विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करेंगे और स्वदेशी उत्पादों को अपनाएंगे, तो इससे न केवल ब्रिटिश साम्राज्य को कमजोर किया जा सकेगा, बल्कि भारतीयों में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की भावना भी जागृत होगी। गांधी जी का यह दृष्टिकोण था कि जब भारतीय अपनी जरूरतों के लिए विदेशी वस्त्रों और उत्पादों पर निर्भर नहीं रहेंगे, तो यह ब्रिटिश साम्राज्य के आर्थिक शोषण के खिलाफ एक बड़ा कदम होगा।

स्वदेशी आंदोलन के दौरान गांधी जी ने खादी को एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। खादी को पहनने का आह्वान करके उन्होंने भारतीयों को यह संदेश दिया कि केवल अपनी पारंपरिक वस्त्रों को अपनाकर ही ब्रिटिश वस्त्रों के बहिष्कार को प्रभावी बनाया जा सकता है। खादी न केवल एक वस्त्र था, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और भारतीय संस्कृति का प्रतीक बन गया। इसने भारतीयों को यह एहसास दिलाया कि वे विदेशी उत्पादों पर निर्भर रहने की बजाय अपने देश की कारीगरी और उद्योग को बढ़ावा दे सकते हैं।

नागरिक अवज्ञा आंदोलन और स्वदेशी विचारधारा— स्वदेशी विचारधारा के तहत गांधी जी ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन (ब्यअपस क्पेवइमकपमदबम डवअमउमदज) की शुरुआत की, जिसमें भारतीयों ने ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध किया। यह आंदोलन गांधी जी के स्वदेशी विचारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसमें उन्होंने भारतीयों को अपनी स्वतंत्रता के लिए खड़ा होने के लिए प्रेरित किया। गांधी जी का मानना था कि एक सशक्त और जागरूक जनसंख्या ही स्वतंत्रता संग्राम को प्रभावी बना सकती है, और इसके लिए उनका आह्वान था कि भारतीय नागरिक ब्रिटिश शासन के उन कानूनों का उल्लंघन करें जो उनके अधिकारों के खिलाफ थे। गांधी जी ने यह स्पष्ट किया कि स्वदेशी आंदोलन का उद्देश्य केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करना नहीं था, बल्कि यह भारतीय जनता की आंतरिक ताकत और आत्मनिर्भरता को भी उजागर करना था। उनका कहना था कि स्वदेशी वस्त्रों और उत्पादों को अपनाकर, और ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार करके, भारतीय समाज एकजुट हो सकता है और उसे अपने देश की स्वतंत्रता का अधिकार मिल सकता है। यह आंदोलन न केवल एक राजनीतिक संघर्ष था, बल्कि यह भारतीय समाज में

जागरूकता और सामाजिक चेतना का भी हिस्सा था।

स्वदेशी विचारधारा के वैश्विक प्रभाव— स्वदेशी विचारधारा का प्रभाव केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने दुनिया भर में उपनिवेशी शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध और स्वदेशी आंदोलन ने अन्य उपनिवेशों में भी स्वतंत्रता संग्राम की लहरें पैदा कीं। उनकी विचारधारा ने यह सिद्ध किया कि आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के माध्यम से किसी भी साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया जा सकता है। स्वदेशी विचारधारा ने महात्मा गांधी को एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत किया, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया आयाम दिया। उनका विश्वास था कि भारतीयों को विदेशी शोषण से मुक्ति तभी मिल सकती है जब वे अपनी आंतरिक ताकत को पहचानें और स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर आत्मनिर्भर बनें। स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से गांधी जी ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्य का विरोध किया, बल्कि भारतीय समाज में एक नई चेतना और आत्मसम्मान की भावना भी उत्पन्न की। उनका यह दृष्टिकोण न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण था, बल्कि यह पूरे विश्व में उपनिवेशी शासन के खिलाफ संघर्ष के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत हुआ।

निष्कर्ष— महात्मा गांधी की स्वदेशी विचारधारा न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी, बल्कि यह भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। गांधी जी ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीयों को आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की ओर अग्रसर किया। उनका उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज को एक नई दिशा दी, जिसमें भारतीयों को अपनी परंपराओं, संस्कृति और संसाधनों पर गर्व करने की प्रेरणा दी। गांधी जी का यह विश्वास था कि भारतीय स्वतंत्रता का वास्तविक रूप तभी संभव है जब हम आत्मनिर्भर बनें और विदेशी वस्तुओं एवं उत्पादों का बहिष्कार करें। स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से उन्होंने भारतीयों को यह समझाया कि समाज की प्रगति के लिए हमें अपनी जड़ों से जुड़ना होगा और अपने देश की उत्पादकता को बढ़ावा देना होगा। उनका यह संदेश कि “स्वदेशी अपनाओ, आत्मनिर्भर बनो” न केवल उस समय के लिए, बल्कि आज के समय में भी प्रासंगिक है, जब हम आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक समृद्धि की दिशा में काम कर रहे हैं। गांधी जी की स्वदेशी विचारधारा ने भारतीय राजनीति को एक जन आंदोलन का रूप दिया, जिसमें केवल बड़े नेताओं ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों ने भी भाग लिया। इस विचारधारा ने भारतीयों को यह एहसास कराया कि उनका हर एक प्रयास देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए महत्वपूर्ण है। आज भी गांधी जी के स्वदेशी विचार हमें अपने देश के संसाधनों का सम्मान करने, आत्मनिर्भर बनने और सामाजिक सुधार की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ सूची—

1. गांधी, महात्मा. “हिंद स्वराज” 1909.
2. गांधी, महात्मा. षडल माचमतपउमदजे पूजी ज्तनजी. छंअंरपअंद च्नइसपौपदह भवनेम, 1957.
3. गांधी, महात्मा. ष्जेमँजवतल वडिल माचमतपउमदजे पूजी ज्तनजी. ष्जेम ब्ससमबजमकँवतो वडिँजजं वंदकीपए टवस.1.
4. कुमारी, रेखा. “महात्मा गांधी की स्वदेशी विचारधारा” भारतीय विचारधारा, 2010, पृ. 48–72.
5. जोहरी, जे.एन. “महात्मा गांधी का सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान” महात्मा गांधी : जीवन और संघर्ष, 2009, पृ. 88–112.

6. डॉ. रामनिवास. "स्वदेशी आंदोलन और गांधी जी का योगदान" स्वतंत्रता संग्राम और गांधी, 2014, पृ. 150–180.
7. पांडे, कृष्ण मोहन. "गांधीजी और स्वदेशी आंदोलन" समाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता संग्राम, 2015, पृ. 234–245.
8. दवे, ए.वी. "महात्मा गांधी की राजनीतिक विचारधारा" भारतीय राजनीति के दृष्टिकोण, 2011, पृ. 90–120
9. पारेख, जयराम. "गांधी का समग्र दृष्टिकोण" गांधी दर्शन, 2008, पृ. 115–140.

Cite this Article-

"दिव्य प्रकाश सिंह", 'महात्मा गांधी और स्वदेशी अवधारणा: एक अध्ययन' Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:05, December 2024.

Journal URL- <https://www.researchvidyapith.com/>

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i50015

Published Date- 14 December 2024